अभ्यास पत्रक

पाठ: 5 - कबीर के दोहे

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

---

1. निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर चुनें। (5 अंक)

(i) कबीर के अनुसार, किस तपस्या के बराबर कोई तपस्या नहीं है?

(क) झूठ (ख) मौन (ग) सच (घ) भक्ति

(ii) कबीर ने अनुपयोगी बड़प्पन की तुलना किस पेड़ से की है?

(क) आम (ख) नीम (ग) पीपल (घ) खजूर

(iii) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय" - इस पंक्ति में कबीर ने किसे श्रेष्ठ बताया है?

(क) गोविंद (ईश्वर) को (ख) गुरु को (ग) दोनों को बराबर (घ) स्वयं को

(iv) कबीर के अनुसार, किस चीज की 'अति' (अधिकता) भली नहीं होती?

(क) बोलना और चुप रहना (ख) बरसना और धूप

(ग) (क) और (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

(v) जिसके हृदय में सच का वास होता है, वहाँ किसका वास होता है?

(क) पाप का (ख) गोविंद का (ग) गुरु (ईश्वर) का (घ) धन का

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें। (5 अंक)

(i) कबीर ने सबसे बड़ा पाप किसे कहा है?

उत्तर- .....

(ii) खजूर का पेड़ पंथी (यात्री) के किस काम नहीं आता?

उत्तर- .....

(iii) गुरु ने शिष्य पर क्या उपकार किया है?

उत्तर- .....

(iv) कबीर किस दोहे में जीवन में संतुलन के महत्व को बताते हैं?

उत्तर- .....

(v) "काके लागौं पाँय" का क्या अर्थ है?

उत्तर- .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें। (3 x 2 = 6 अंक)

(i) खजूर के पेड़ का उदाहरण देकर कबीर क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर- .....

.....

(ii) कबीर गुरु को गोविंद से भी बड़ा क्यों मानते हैं?

उत्तर- .....

.....

(iii) "साँच बराबर तप नहीं" - इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- .....

.....

4. निम्नलिखित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का उत्तर विस्तार से दें। (4 अंक)

(i) "अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप। अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।" - इस दोहे का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि कबीर इसके माध्यम से जीवन का कौन-सा महत्वपूर्ण सिद्धांत सिखाना चाहते हैं।

उत्तर- .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उत्तर कुंजी (वर्कशीट - 1)

1. बहुविकल्पीय प्रश्न:

(i) (ग) सच

(ii) (घ) खजूर

(iii) (ख) गुरु को

(iv) (ग) (क) और (ख) दोनों

(v) (ग) गुरु (ईश्वर) का

2. एक वाक्य में उत्तर:

(i) कबीर ने झूठ को सबसे बड़ा पाप कहा है।

(ii) खजूर का पेड़ पंथी (यात्री) को छाया नहीं दे पाता।

(iii) गुरु ने गोविंद (ईश्वर) तक पहुँचने का मार्ग बताकर शिष्य पर उपकार किया है।

(iv) कबीर "अति का भला न बोलना..." वाले दोहे में जीवन में संतुलन के महत्व को बताते हैं।

(v) "काके लागौं पाँय" का अर्थ है - किसके पैर लगूँ या किसे पहले प्रणाम करूँ।

3. संक्षिप्त उत्तर:

(i) खजूर के पेड़ का उदाहरण देकर कबीर यह समझाना चाहते हैं कि सिर्फ बड़ा होना ही काफी नहीं है। यदि आपके बड़प्पन से किसी का भला न हो सके (जैसे खजूर का पेड़ न छाया देता है और न उसके फल आसानी से मिलते हैं), तो ऐसा बड़प्पन व्यर्थ है।

(ii) कबीर गुरु को गोविंद से बड़ा इसलिए मानते हैं क्योंकि गुरु ही हमें ज्ञान देकर ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं। बिना गुरु के ज्ञान के ईश्वर को पहचानना संभव नहीं है।

(iii) इस पंक्ति का आशय है कि सत्य बोलना और सत्य के मार्ग पर चलना ही सबसे बड़ी तपस्या है। इसके लिए किसी और कठिन साधना की आवश्यकता नहीं है।

4. दीर्घ उत्तरीय उत्तर: (i) इस दोहे का अर्थ है कि किसी भी चीज की अधिकता अच्छी नहीं होती। कबीर उदाहरण देते हुए कहते हैं कि न तो बहुत अधिक बोलना अच्छा है और न ही हर समय चुप रहना। ठीक उसी प्रकार, न तो बहुत अधिक वर्षा अच्छी होती है (क्योंकि वह बाढ़ लाती है) और न ही बहुत अधिक धूप अच्छी होती है (क्योंकि वह सब कुछ सुखा देती। इसके माध्यम से कबीर जीवन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत सिखाना चाहते हैं, जो है - **'संतुलन' या 'संयम'**। वे कहते हैं कि जीवन के हर क्षेत्र में हमें संतुलन बनाए रखना चाहिए। हमें अपनी वाणी, व्यवहार और यहाँ तक कि अपनी इच्छाओं में भी एक मध्य मार्ग अपनाना चाहिए। किसी भी चीज का चरम या 'अति' हमेशा हानिकारक होती है।